ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-1* April-2021
Anthology : The Research

भारतीय दर्शन और कला प्रतीक
Indian Philosophy and Art Symbol

Paper Submission: 01/04/2021, Date of Acceptance: 16/04/2021, Date of Publication: 25/04/2021

रेखा धीमान
सह– प्राध्यापक,
चित्रकला विभाग,
शा0 हमीदिया कला एवं
वाणिज्य महाविद्यालय,
भोपाल, म०प्र०, भारत

सारांश

भारतीय दर्शन का विश्व में एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यह स्वयं में गूढ़ रहस्यों और अनगिनत संभावनाओं को समाहित किए हुए है। इन्हें कला प्रतीकों ने साकार रूप देकर और भी समृद्ध बना दिया है। इस प्रकार दर्शन और प्रतीक में गहरा संबंध दृष्टिगत होता है। जहां भारतीय दर्शन चिंतन-मनन एवं तर्क-वितर्क से संबंधित है, जिन्हें वाचिक या लिपिबद्ध किया गया है, वहीं कला का संबंध संवेदनाओं से है जो भारतीय दर्शन को मूर्त रूप प्रदान करती है। कला प्रतीक ही गागर में सागर भरने का कार्य करते हैं। इसके सशक्त उदाहरण वेदों, बौद्ध ,जैन एवं हिंदू धर्म में दिखाई देते हैं। लोक कला में प्रतीकों का महत्वपूर्ण स्थान है। वेदों में आध्यात्मिक एवं भौतिक रहस्यों का उजागर किया गया है। वहीं बौद्ध धर्म पुनर्जन्म और मोक्ष की अवधारणा को लेकर अग्रसर हुआ हैं। जैन धर्म ने प्रतीकों के माध्यम से जैन दर्शन और निर्वाण की परंपरा को उजागर किया। इस प्रकार कहा जाए तो भारतीय दर्शन में कला प्रतीकों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

Indian philosophy has an important place in the world. It contains esoteric mysteries and innumerable possibilities. Art symbols have made them even richer by giving them real shape. In this way, a deep connection between philosophy and symbol is seen. While Indian philosophy deals with contemplation, reasoning and argumentation, which are spoken or written, art deals with sensations that gives Indian philosophy a tangible form. It is the art symbol that performs the work of filling the "Gagar me Sagar". Strong examples of this appears in the Vedas, Buddhist Aegean and Hinduism. Symbols have an important place in folk art. Spiritual and material mysteries have been revealed in the Vedas. At the same time, Buddhism has advanced on the concept of rebirth and salvation. Jainism exposed the tradition of Jain philosophy and nirvana through symbols. Thus, art symbols have an important place in Indian philosophy.

मुख्य शब्द : निर्वाण, जातक, निगमन, वैशेषिक, मीमांसा।
Nirvana, Jataka, Nigaman, Vaisheshika, Mimansa

प्रस्तावना

भारतीय दर्शन अपने आपमें गूढ़ रहस्य और संभावनाओं से ओतप्रोत हैं। भारतीय दर्शन का संबंध केवल धर्म दर्शन या वैदिक दर्शन से नहीं अपितु भारतवर्ष के किसी भी धर्म, संप्रदाय, जाति द्वारा किए गए चिंतन – मनन से हैं दर्शन में किसी घटना को मात्र देखना नहीं अपितु इसके पीछे-छिपे सत्य को उजागर करना होता हैं, जिसमें अंतर्दृष्टि तथा तर्क –वितर्क भी होते हैं। भारतीय दर्शन को कला साहित्य में समृद्ध किया है, ऐसा कहा जा सकता है, क्योंकि दर्शन केवल लिपिबद्ध है परंतु कला ने दर्शन को मूर्त रूप प्रदान किया, जिसके सशक्त प्रमाण चित्रों, भित्ति चित्र (अजंता, एलोरा) सांची, भरहुत, अमरावती, मथुरा, गांधार शैली के अंकन में है। भारतीय दर्शन मुख्यत: आस्तिक और नास्तिक या वैदिक और अवैदिक विचारधारा को लेकर चला है, जिसमें सांख्य, योग, न्याय , वैशेषिक, वेदांत और मीमांसा आस्तिक या वैदिक दर्शन में आते हैं वहीं जैन और बौद्ध अवैदिक दर्शन में। दोनों ही धाराए धर्म को साथ लेकर चली हैं। कला में धर्म के साथ ही सौंदर्य भी प्रस्फुटित हुआ है। किसी भी सृजन के मूल में कल्पना या आंतरिक मनोभाव अवश्य रहे हैं, तभी किसी कृति का निर्माण हुआ है। यदि हम कला दर्शन की बात करते हैं तो इसमें सौंदर्य प्रमुख तत्व के रूप में सामने आया है जो किसी भी कृति का प्राण है। कला के क्षेत्र में रविन्द्र

नाथ टैगोर भी 'सत्यम् शिवम् सुंदरम्' की अवधारणा को लेकर चले हैं। प्रतीकों ने इस अवधारणा को और भी सशक्त और गूढ़ बना दिया है।

'सन 1936 में मार्टिन हाईडेगर ने 'द ओरिजिन ऑफ द वर्क ऑफ आर्ट' निबंध लिखा है, जिसे कला दर्शन की सर्वश्रेष्ठ रचनाओं में से एक माना जाता है। हाईडेगर ने इस निबंध में दावा किया है कि कलाकृति को इस जगत में स्थित वस्तु के रूप में देखना आधुनिकता की मूलभूत लाक्षणिक त्रुटियों में से एक है। हाइडेगर के अनुसार कला तो एक नए जगत के द्वार खोलती है, कला के रूप में सत्य अपने आप में घटता नहीं हमारे अनुभव के दायरे में वस्तुओं के अस्तित्व का उद्घाटन भी करता है।'[1]

धर्म का उद्देश्य मानव कल्याण की भावना भी रही है। प्रत्येक धर्म सुख-दुख का कारण और उसका निदान बताने का प्रयास करता है। यही नहीं वह मोक्ष और निर्वाण की राह भी दिखाता है। विष्णुधर्मोत्तर पुराण में वर्णित चार अंगों में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में धर्म का स्थान सबसे बड़ा हैं।मानव सदैव से धर्म के बारे में चिन्तन करता रहा है। भारत का धर्म और दर्शन दोनों विख्यात हैं। धर्म अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए कर्म को अधिक महत्व देता है, वहीं दर्शन बौद्धिक चिंतन को। दर्शन आगमन, निगमन, तर्क और प्रयोग विधि अपनाता है। धर्म में श्रद्धा और विश्वास आवश्यक हैं। दोनों का एक ही उद्देश्य है वह है **''परम–तत्व''** की खोज। भारतीय दार्शनिकों ने चिंतन-मनन के उपरांत रहस्यात्मक पहलुओं को उजागर किया, वही कलाकारों ने उन प्रतीक रूपों को सबके सामने लाकर सहज और सरल बनाया।

कलाकार सदैव से इस रहस्योद्घाटन के लिए प्रयासरत रहता है। जब कलाकार की दृष्टि सूक्ष्म से सूक्ष्मतम की ओर जाती है तो वह प्रतीक का रूप धारण कर लेती है। जब विचार करते–करते हम किसी ऐसे स्तर पर पहुंचते हैं, जहां सामान्य भाषा पद्धति हमारी अनुभूतियों को व्यक्त करने में असमर्थ रहती है, तो हम प्रतीक विधि का आश्रय लेते हैं। जुंग के अनुसार 'किसी अज्ञात वस्तु के लिए उसके भ्रम के रूप में रखी आकृति प्रतीक कहलाती है और ऐसा विश्वास किया जाता है कि उस अज्ञात वस्तु का अस्तित्व उस वस्तु में है।'

प्रागैतिहासिक काल से वर्तमान समय तक अनेक प्रतीकों का प्रयोग होता आया है। आदिम अवस्था में मानव ने प्रकृति में प्राप्त रूपों मानव, पशु, पक्षी, नदी, पहाड़ को ही ज्यामितीय आकारों में देखा। किंतु जैसे-जैसे धर्म का प्रादुर्भाव हुआ मानव की वैचारिक क्षमता भी बढ़ती गई। भारतवर्ष में कला के क्षेत्र में मुख्यत: वैदिक धर्म, बौद्ध धर्म, एवं जैन धर्म का विशेष महत्व दिखाई देता है। अतः कलाकारों ने इन्हीं धर्मों के माध्यम से प्रतीक के रहस्यात्मक पहलुओं को उजागर किया जो निम्नानुसार हैं:–

1. वैदिक प्रतीक
2. बौद्ध प्रतीक
3. जैन प्रतीक

वैदिक प्रतीक

प्राचीन काल में भारतीय दर्शन का मूल वेद माने जाते थे। इन्हें आस्तिक दर्शन भी कहा जाता था। वैदिक दर्शन छः हैं :

1. सांख्य
2. योग
3. न्याय
4. वैशेषिक
5. मीमांसा
6. वेदांत

वेद भौतिक और आध्यात्मिक रहस्यों के लिए परम तत्व की प्राप्ति है। वैदिक दर्शन के आचार्यों ने सर्वप्रथम कला में जिस प्रतीक का प्रयोग किया वह प्रस्तर की अंडाकार शालिग्राम की बटिया या मूर्ति प्रतीक है। इसे वृक्षों के नीचे रखा जाता है और आज भी इसको इसी रूप में पूजा जाता है। 'प्रस्तर प्रतीक ब्रह्मांड में अंडे के रूप में सबसे पहले जीवात्मा का द्योतक है। वृक्ष के रूप में डालियों और पत्तियों के फैलाव स्वयं ब्रह्मांड प्रतीक के रूप में माना जाता है । एक प्रमुख प्रतीकात्मक आकार जिसके दर्शन हमें कला के रूप में होते हैं वह है सर्प। सर्प को मृत्यु और मुक्ति का प्रतीक माना गया है। इसी प्रकार बटिया, वृक्ष और सर्प क्रमशः जीवन, प्रगति और निर्माण के घोतक हैं।'[2]

'इसी प्रकार शिवलिंग का प्रतीकात्मक रूप जीवन और मोक्ष को दर्शाता है। ब्रह्मांड में इसे ईश्वर के रूप का प्रतीक सम–त्रिबाहू त्रिभुज माना जाता है। स्वास्तिक का रूप सृजनात्मक शक्ति व जीवन का द्योतक है, वही योग दर्शन के अनुसार ब्रह्मांड की चक्रशक्ति जिसे महाकुंडलिनी कहा गया है जो मानव शरीर में निवास करती है।'[3]

इसी प्रकार अनेकों प्राकृतिक, मानवीय , देवी तथा ज्यामितीय रूपों को चित्रकारों ने अपने चित्रों में प्रतीक रूप में स्वीकारा है जैसे अश्व को शक्ति, कबूतर को शांति और मोर को सौंदर्य का प्रतीक माना है।

बौद्धिक प्रतीक

भारत वर्ष में बौद्ध दर्शन आत्मा-परमात्मा, जन्म-पुनर्जन्म तथा मोक्ष की अवधारणा को लेकर आगे बढ़ा है। गौतम बुद्ध बुद्धत्व अर्थात् ज्ञान प्राप्त करने वाली आत्माओं के प्रतीक बन गए। बौद्ध चित्रकला बहुत ही महत्वपूर्ण उद्देश्य को लेकर चली है, वही तत्कालीन चित्रकारों ने आत्म प्रशंसा त्यागकर कला के प्रमुख उद्देश्य धर्म और संस्कृति के उत्थान को स्थान दिया। चित्रकला के रूप में अजंता, एलोरा, बाघ ऐसे महामंडप है जहां बुद्ध भगवान को प्रतीक रूप में देखा जा सकता है। बौद्ध प्रतीकों के द्वारा ही चित्र, मूर्ति और स्थापत्य में भक्ति, श्रद्धा एवं प्रेम के दर्शन होते हैं। अजंता की गुफा संख्या छ: में त्रिरत्न नामक चित्र अंकित है जो बुद्धम, धम्मम और संघम का प्रतीक है। 17वीं गुफा के बरामदे में अंकित चक्र त्रिशूल, जिसे भवचक्र भी कहा जाता है। इसमें बौद्ध धर्म के सिद्धांतों को प्रतीकात्मक रूप से दर्शाया गया है। एक अन्य चित्र 'सप्तपदम चिन्ह' में महामाया एक साल वृक्ष के

नीचे खड़ी हैं। ऐसा माना जाता है कि इसके पश्चात् गौतम बुद्ध का जन्म हुआ। इसी प्रकार यदि बौद्ध मूर्तिकला पर दृष्टि डालें तो सांची, भरहुत, अजंता, एलोरा ऐसे कला मंडप है जहां बुद्ध की उपस्थिति को प्रतीकात्मक रूप से अंकित किया गया। यहां पर सांची, भरहुत में चरण पादुका, बोधिवृक्ष, कमलदल, स्तूप आदि के प्रतिमानों से बुद्ध की उपस्थिति दर्शायी है। जातक कथाओं के अंकन में कपि जातक, हंस जातक, छदन्त जातक, साम जातक आदि कथाएं उनके पुनर्जन्म और उससे संबंधित क्रियाकलापों से परिपूर्ण है। 'अतः हम कह सकते हैं कि भारतीय बौद्ध कला एवं उसके सृजित प्रतीकों का महत्वपूर्ण योगदान है उसने अपनी श्रेष्ठ सृजनात्मक आध्यात्मिकता से भावी कला को वासनाओं की तृप्ति का साधन नहीं बनने दिया।'[4]

जैन प्रतीक

जैन कला में प्रतीक गुहा मंदिरों, पुस्तकचित्रों एवं पटचित्रों में प्राप्त होते हैं।' जैन दर्शन उदयगिरि-खंडगिरि की विभिन्न गुफाओं में प्रतीक रूप में वर्धमंगल, स्वास्तिक, नंदिपद, चैत्यवृक्ष, सिद्धार्थ वृक्ष, सर्पयुगल, धर्मचक्र और तीर्थंकर चिन्हों का प्रयोग विपुलता से मिलता है।'[5] इसके अलावा त्रिरत्न कलश, भद्रासन, मत्स्य, पुष्पमाला, अशोकवृक्ष, दुंदुभिछत्र, चमर, घण्टा, गंगा –यमुना आदि प्रतीक चिन्हों का विशेष स्थान है। यही नहीं जैन तीर्थंकरों के भी अपने प्रतीक चिन्ह जैसे भगवान ऋषभदेव-सांड, अजितनाथ-हाथी, शिवसेना, नेमिनाथ-शंखवारादत्ता, पारसनाथ-सर्प, शांतिनाथ-बकरी, धर्मनाथ-वज्र दण्ड आदि। इस प्रकार जैन दर्शन में प्रतीकों की प्रचुरता दिखाई देती है।

इसी प्रकार भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में भी लोककला के रूप में प्रतीकों के दर्शन कलश, स्वास्तिक, चिड़िया, कौवा, ज्यामितीय आकार और विभिन्न रंगों के रूप में होते हैं।जिन्हें भारतीय पर्वों पर अनेक प्रतीकों के रुप में चित्रण व अंकन किया जाता है।

अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध पत्र के माध्यम से कलादर्शन जैसे गूढ़ विषयों को प्रतीकों के माध्यम से सरल और समझने योग्य बनाना है। यही प्रतीक गागर में सागर भरने की सामर्थ रखते हैं। प्रत्येक धर्म को अग्रसर करने में भी सहायक रहे हैं।

निष्कर्ष

भारतीय कला और दर्शन दोनों ने ही विश्व में अपना स्थान बनाया है। मनीषियों का ध्यान चिंतन–मनन अध्ययन और कर्म रहा है। भारतीय कला दर्शन को कलाकार चित्र प्रतीक के माध्यम से व्यक्त करने की चेष्टा में सफल रहा है। यही प्रतीक दर्शन के प्राण हैं और गागर में सागर भरने का कार्य करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *https://hi.m.wikipedia.org*
2. *भारतीय दर्शन– डॉ शोभा निगम मोतीलाल बनारसीदास– दिल्ली P–7*
3. *कला सौंदर्य और जीवन – प्रोफेसर रणवीर सक्सेना – रेखा प्रकाशन देहरादून P–366–367*
4. *भारतीय चित्रकार और उनकी आध्यात्मिक चित्रकला – सम्मेलन पत्रिका P-157*
5. *https://jain puja.com*
6. *https://jainpuja.com*

वैदिक प्रतीक

45. Triratna Emblem. (From a sculpture a Amarâvatî.)
त्रिरत्न– बौद्ध प्रतीक

जैन प्रतीक